# कथा सरिता

## कलियुगी प्रेम

अर्जुन ने एक रात को स्वप्न में देखा कि एक गाय अपने नवजात बछड़े को प्रेम से चाट रही है। चाटते-चाटते वह गाय उस बछड़े की कोमल खाल को छील देती है। उसके शरीर से रक्त निकलने लगता है और वह बेहोश होकर नीचे गिर जाता है।

अर्जुन प्रातः यह स्वप्न भगवान श्री कृष्ण को बताते हैं। भगवान मुस्करा कर कहते हैं कि यह स्वप्न कलियुग का लक्षण है। कलियुग में माता-पिता अपनी संतान को इतना प्रेम करेंगे, उन्हें सुविधाओं का इतना व्यसनी बना देंगे कि वे उनमें डूबकर अपनी ही हानि कर बैठेंगे, सुविधायें और कुमार्गगामी बनकर विभिन्न अज्ञानताओं में फंसकर अपने होश गँवा देंगे।

आजकल हो भी यही रहा है। माता-पिता बच्चों को मोबाइल, बाइक-कार, कपड़ें, फैशन की सामग्री और पैसे उपलब्ध करा देते हैं। बच्चों का चिंतन इतना विषाक्त हो जाता है कि वो माता-पिता से झूठ बोलना, छिपाना, चोरी करना, अपमान करना सीख जाते हैं।

## अटूट निश्चय

एक अत्यंत गरीब महिला जो ईश्वरीय शक्ति पर बेइंतिहा विश्वास करती थी, एक बार अत्यंत ही विकट स्थिति में आ गई। कई दिनों से खाने के लिए पूरे परिवार को नहीं मिला। एक दिन उसने रेडियो के माध्यम से ईश्वर को अपना संदेश भेजा कि वह उसकी मदद करे। यह प्रसारण एक नास्तिक, घमण्डी और अहंकारी उद्योगपति ने सुना और उसने सोचा कि क्यों न इस महिला के साथ कुछ ऐसा मज़ाक किया जाये कि उसकी ईश्वर के प्रति आस्था डिग जाये।

उसने अपने सेक्रेट्री को कहा कि वह ढ़ेर सारा खाना और महीने भर का राशन उसके घर पर देकर जाये ओर जब वह महिला पूछे कि किसने भेजा है तो कह देना कि ``शैतान'' ने भेजा है। जैसे ही महिला के पास सामान पहुँचा तो उसके परिवार ने तृप्त होकर भोजन किया। फिर वह सारा राशन अलमारी में रखने लगी।

जब महिला ने पूछा नहीं कि यह सब किसने भेजा है तो सेक्रेट्री से रहा नहीं गया और पूछा, आपको क्या जिज्ञासा नहीं होती कि यह सब किसने भेजा है।

उस महिला ने बेहतरीन जवाब दिया, मैं इतना क्यों सोचूं या पूछूं, मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है, मेरे भगवान जब आदेश देते हैं तो शैतानों को भी उस आदेश का पालन करना पड़ता है!

## देने की भावना

एक संत ने एक द्वार पर दस्तक दी और आवाज़ लगाई ``भिक्षांदेहि''।

– एक छोटी बच्ची बाहर आई और बोली, ``बाबा, हम गरीब हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है।''

संत बोले, ``बेटी, मना मत कर, अपने आंगन की धूल ही दे दे।'' लड़की ने एक मुट्ठी धूल उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। शिष्य ने पूछा, ``गुरुजी, धूल भी कोई भिक्षा है? आपने धूल देने को क्यों कहा?''

संत बोले, ``बेटे, अगर वह आज ना कह देती तो फिर कभी नहीं दे पाती। आज धूल दी तो क्या हुआ, देने का संस्कार तो पड़ गया। आज धूल दी है, उसमें देने की भावना तो जागी, कल समर्थवान होगी तो फल-फूल भी देगी।''

जितनी छोटी कथा है निहितार्थ उतना ही विशाल। साथ में आग्रह भी...दान करते समय दान हमेशा अपने परिवार के छोटे बच्चों के हाथों से दिलवायें...जिससे उनमें देने की भावना बचपन से बने।

## समान बल का प्रयोग

गंगा के तट पर एक संत अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे, तभी एक शिष्य ने पूछा, ``गुरुजी, यदि हम कुछ नया, कुछ अच्छा करना चाहते हैं, लेकिन समाज उसका विरोध करता है तो हमें क्या करना चाहिए?

गुरुजी ने कुछ सोचा और बोले, ``इस प्रश्न का उत्तर मैं कल दूंगा''

अगले दिन जब सभी शिष्य नदी के तट पर एकत्रित हुए तो गुरुजी बोले, ``आज हम एक प्रयोग करेंगे... इन तीन मछली पकड़ने वाली डंडियों को देखो, ये एक ही लकड़ी से बनी हैं और बिल्कुल एक समान हैं।''

उसके बाद गुरुजी ने उस शिष्य को आगे बुलाया जिसने कल प्रश्न किया था।

``पुत्र, ये लो इस डंडी से मछली पकड़ो।'', गुरुजी ने निर्देश दिया।

शिष्य ने डंडी से बंधे कांटे में आंटा लगाया और पानी में डाल दिया। फौरन ही एक बड़ी मछली कांटे में आ फंसी।

``जल्दी पूरी ताकत से बाहर की ओर खींचो'' गुरुजी बोले।

शिष्य ने ऐसा ही किया, उधर मछली ने भी पूरी ताकत से भागने की कोशिश की। फलतः डंडी टूट गयी।

``कोई बात नहीं; ये दूसरी डंडी लो और पुनः प्रयास करो।'' गुरुजी बोले।

शिष्य ने फिर से मछली पकड़ने के लिए कांटा पानी में डाला।

इस बार जैसे ही मछली फंसी, गुरुजी बोले, ``आराम से...एकदम हल्के हाथ से डंडी को खींचो।''

शिष्य ने ऐसा ही किया, पर मछली ने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि डंडी हाथ से छूट गयी।

गुरुजी ने कहा, ``ओह्हो, लगता है मछली बच निकली, चलो इस आखिरी डंडी से एक बार फिर से प्रयत्न करो।''

शिष्य ने फिर वही किया।

पर इस बार जैसे ही मछली फंसी गुरुजी बोले, ``सावधान, इस बार न अधिक ज़ोर लगाओ न कम। बस जितनी शक्ति से मछली खुद को अंदर की ओर खींचे उतनी ही शक्ति से तुम डंडी को बाहर की ओर खींचो। कुछ ही देर में मछली थक जायेगी और तब तुम आसानी से उसे बाहर निकाल सकते हो।''

शिष्य ने ऐसा ही किया और इस बार मछली पकड़ में आ गयी।

``क्या समझे आप लोग?'' गुरुजी ने बोलना शुरु किया... ये मछलियाँ उस समाज के समान हैं जो आपके कुछ करने पर आपका विरोध करता है।

यदि आप इनके खिलाफ अधिक शक्ति का प्रयोग करेंगे तो आप टूट जायेंगे।

यदि आप कम शक्ति का प्रयोग करेंगे तो भी वे आपको या आपकी योजनाओं को नष्ट कर देंगे...लेकिन यदि आप उतने ही बल का प्रयोग करेंगे जितने बल से वे आपका विरोध करते हैं तो धीरे-धीरे वे थक जायेंगे... हार मान लेंगे और तब आप जीत जायेंगे।

इसलिए कुछ उचित करने में जब ये समाज आपका विरोध करे तो समान बल प्रयोग का सिद्धान्त अपनाइये और अपने लक्ष्य को प्राप्त कीजिये।

**धनगढ़ी-पश्चिम नेपाल।** गोदावरी धाम सहस्त्र दिव्य दर्शन कुम्भ मेला के उद्घाटन अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति विद्यादेवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा।

**सेन फ्रान्सिसको।** नवनिर्वाचित मेयर एडविन ली के इनॉगरल ईव इंटरफेथ प्रेयर सर्विस के कार्यक्रम में उनसे मुलाकात कर बधाई देते हुए ब्र.कु. चंद्रू।

**हरदुआगंज-उ.प्र.।** 'किसान विकास अभियान' के अंतर्गत गंगा पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य देवराज शर्मा को ओमशान्ति मीडिया व ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशि व ब्र.कु. गीता।

**फिरोजपुर कैंट-पंजाब।** बी.एस.एफ. में किसान सम्मेलन के कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में डी.आई.जी. सुरिन्द्र कुमार, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

**बरनाला-पंजाब।** 'किसान सशक्तिकरण रैली' के दौरान रेड क्रॉस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए सीनियर डॉ. गुरजन्त सिंह,डी.टी.ओ.,एग्रीकल्चरल डिपार्टमेंट। साथ हैं ब्र.कु. बहनें व अन्य।

**फतेहगढ़ साहिब-पंजाब।** 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. परिधि सिंह,स्वाइल टेस्टिंग ऑफिसर, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. सविता व अन्य।